शक्ति संतुलन का एक सुचिंतित संकेत

पूतिन ने अपने उसी बयान में यह स्पष्ट किया कि चीन की सैन्य क्षमता बढ़ाने में रूसी सहयोग की अहम भूमिका पहले से ही चली आ रही है। फिर भी अगर सैन्य गठबंधन को लेकर दोनों पक्ष सावधानी बरत रहे हैं तो उसकी वजह यह है कि ऐसे गठबंधन अक्सर व्यापारिक हितों पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

रानी शर्मा।।

रूसी राष्ट्रपति पूतिन ने पिछले दिनों एक दिलचस्प बयान में कहा कि मास्को और पेइचिंग के बीच सैन्य गठबंधन की जरूरत दोनों में से किसी देश को नहीं है, फिर भी यह संभव है। हालांकि चीन ने इस बयान पर कोई खास उत्साह नहीं दिखाया और रूसी विशेषज्ञों ने भी मौजूदा हालात में सैन्य गठबंधन जैसी किसी संभावना को अपने तईं खारिज ही कर दिया। बावजूद इसके, पूतिन ने अगर इसे सैद्धांतिक तौर पर संभव कहा है तो इसके गहरे मायने हैं। दिनोंदिन यह साफ होता जा रहा है कि चीन और अमेरिका के संबंधों में आई गिरावट न तो किसी एक नेता की सनक का परिणाम है और न ही चुनावों के जरिए अमेरिकी नेतृत्व बदलने से इसमें कोई बड़ा बदलाव आने जा रहा है। ऐसे में रूसी राष्ट्रपति का यह बयान भविष्य के शक्ति संतुलन का एक सुचिंतित संकेत हो सकता है, जिसमें चीन से ज्यादा जरूरी संदेश अमेरिका के लिए मौजूद है।

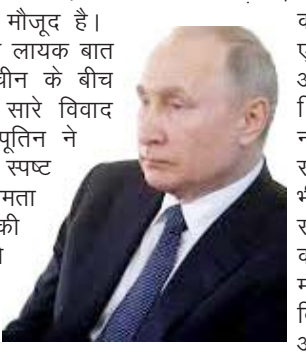

इस संदर्भ में ध्यान देने लायक बात यह है कि रूस और चीन के बीच सीमा संबंधी सारे विवाद सुलझाए जा चुके हैं। पूतिन ने अपने उसी बयान में यह स्पष्ट किया कि चीन की सैन्य क्षमता बढ़ाने में रूसी सहयोग की अहम भूमिका पहले से ही चली आ रही है। फिर भी अगर सैन्य गठबंधन को लेकर दोनों पक्ष सावधानी बरत रहे हैं तो उसकी वजह यह है कि ऐसे गठबंधन अक्सर व्यापारिक हितों पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। मसलन, रूस से फौजी गठबंधन होते ही चीन को यूरोपीय बाजार के बड़े हिस्से से हाथ धोना पड़ेगा। लेकिन अमेरिका और चीन के बीच बढ़ती दूरी और एशिया प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका की बढ़ती दिलचस्पी को रूस नजरअंदाज नहीं कर सकता। इसी तरह भारत भी पूतिन के बयान में मौजूद संकेतों की अनदेखी नहीं कर सकता। चीन के साथ मौजूदा तनाव को देखते हुए विभिन्न देशों का सहयोग और समर्थन हासिल करना जरूरी है, लेकिन ऐसा करते हुए हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि अमेरिका से हमारी नजदीकी रूस को हमसे दूर न लेती जाए।

भारत के बहुत अच्छे संबंध रूस के साथ बहुत पहले से रहे हैं। हथियारों की खरीद से लेकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी समिति में स्टैंड लेने तक यह दोस्ती दोनों देशों के लिए हितकर रही है। कोई कारण नहीं कि आगे इसमें कोई बाधा आने दी जाए। सभी संबंधित देशों को अपनी समझ साफ रखनी चाहिए कि दोस्ती हो या दुश्मनी, भारत अपना हर रिश्ता अपने दम पर ही निभाता आया है। इसके लिए किसी तीसरे देश की छत्रछाया की जरूरत न हमें पहले कभी पड़ी है, न आगे पड़ने वाली है। रूस का सैन्य गठबंधन चीन से बने या न बने, भारत और रूस के रिश्तों में बिगाड़ आने का कोई सूत्र इसमें न मौजूद हो, यह हमें सुनिश्चित करना होगा।

एकमात्र उद्देश्य

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

भारत पर मुस्लिमों ने आक्रमण किया, बार बार किया। उनका एकमात्र उद्देश्य भारत की संपदा को लूटना था। वे बर्बर तो थे किंतु दिमाग से पैदल थे।

फिर अंग्रेज आये, उनकी सामरिक शक्ति इतनी अधिक नही थी कि वे इतने बड़े देश पर बलात अधिक दिनों तक शासन कर पाते। किन्तु वे घाघ और चतुर थे। उन्होंने दो ऐसे कार्य किये जिससे भारत अंदर से टूट गया और उन्हें राज करने में आसानी हुई। किन्तु उसने उस असत्य की नींव डाली जिसमें जान बूझ उसी समय उस कलियुगी रामायण की नींव पड़ी जिसमें जान बूझ कर श्रीराम का चरित्र हनन किया गया।

एक तो उन्होंने भारत की सदियों पुरानी गुरु–शिष्य परंपरा को समाप्त किया। मैकाले के इसी कार्य के लिए लगाया गया जिसने भारत की पूरी शिक्षा व्यवस्था का नाश कर दिया।

संपादकीय

यह वक्त ही क्यों?

यूपी के विधानसभा चुनाव में अब महज डेढ़ साल का वक्त बचा है। डेढ़ साल का वक्त बहुत ज्यादा नहीं होता। ऐसे में मुकाबले के लिए पाले सजने लगे हैं। जहां–जहां विधायकों को यह लग रहा है कि मौजूदा समीकरण उनके पक्ष में नहीं हैं, वे नए दलों के संपर्क में हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव से पहले जब एसपी–बीएसपी के बीच गठबंधन की बात चल रही थी, तो विश्वास का सहज माहौल बनाने के लिए दोनों दलों ने एक–दूसरे के पाला बदलने वाले नेताओं के लिए दरवाजे बंद कर दिए थे। लेकिन अब वह गुजरे दिनों की बात हो चुकी है। यूपी में आठ विधानसभा सीटों के लिए उप चुनाव हो रहे हैं। बीएसपी विपक्ष में होने के दिनों में उपचुनाव नहीं लड़ती रही है, लेकिन इस बार वह मैदान में है। इस वजह से ही कि उप चुनाव के नतीजों के जरिए यह संकेत मिलेगा कि यूपी में मौजूदा वक्त बीजेपी के मुकाबले कौन मुख्य दल है? समाजवादी पार्टी को उप चुनाव से पहले बीएसपी के विधायकों को अपने पाले में दिखाकर माहौल बनाने का सबसे बेहतर मौका लग रहा है। पार्टी लीडरशिप को लगता है कि इसके जरिए वह बीएसपी के अंदर असंतोष की चिंगारी को और ज्यादा हवा दे सकती है। पार्टी के दूसरे विधायक जो अपने पत्ते खोलने से बच रहे हैं, वे भी आगे आ सकते हैं। वैसे यह याद करना भी दिलचस्प है कि एसपी–बीएसपी के रिश्तों में कड़वाहट के बीज 1995 में विधायकों के पाला बदल कराने की वजह से पड़े थे। उस वक्त दोनों दल गठबंधन में सरकार चला रहे थे। यूपी की पॉलिटिक्स में इसे ही गेस्ट हाऊस कांड के नाम से जाना जाता है।

इस सियासी दांव के फेल हो जाने पर समाजवादी पार्टी के अंदर उतनी निराशा और हताशा नहीं होती, अगर यह विफलता महज वोटर्स के फैसले तक सीमित होती।

सियासी तपिश बढ़ी

नदीम।।

यूपी में राज्य सभा चुनाव के बहाने जिस तरह से सियासी तपिश बढ़ी, वह तमाम लोगों को चौंका रही है। पहला सवाल तो यही है कि अभी तो वहां के चुनाव में कम से कम डेढ़ साल का वक्त बाकी है, और दूसरा यह कि क्या यह सारा घटनाक्रम अचानक हुआ? ऐसे में यह समझना ज्यादा जरूरी है कि राजनीति में न तो अचानक कुछ होता है और न ही बिना मकसद कुछ होता है। 2019 के लोकसभा चुनाव के वक्त बीएसपी के साथ गठबंधन समाजवादी पार्टी का सबसे बड़ा दांव था, लेकिन वह नाकामयाब साबित हुआ। इस सियासी दांव के फेल हो जाने पर समाजवादी पार्टी के अंदर उतनी निराशा और हताशा नहीं होती, अगर यह विफलता महज वोटर्स के फैसले तक सीमित होती। लेकिन नतीजे आते ही बीएसपी ने जिस तरह से एसपी से अपने रिश्ते खत्म किए और रिश्ते खत्म करने के जो तर्क गढ़े, उसने एसपी चीफ अखिलेश यादव की राजनीतिक समझ पर सवाल उठाए। अखिलेश यादव राजनीति में नौसिखिया माने गए और यहां तक कहा गया कि 'बहनजी' ने उन्हें पटखनी दे दी। इससे पहले वे 2017 के चुनाव में कांग्रेस के साथ गठबंधन के प्रयोग में फेल हो चुके थे। हाल के दिनों में यूपी में प्रियंका गांधी

के नेतृत्व में कांग्रेस जिस तरह से सक्रिय हुई, उसने भी अखिलेश यादव के लिए चुनौती बढ़ाई है। ऐसे में उन्हें अपने को राजनीतिक रूप से परिपक्व होने और सियासी दांव–पेंच में माहिर होने की बात किसी भी तरह साबित करनी है। अखिलेश पर दोहरा दबाव इसलिए है कि एक तो उन्हें अपने को सियासी मैदान में साबित करना है, तो दूसरे उन्हें खुद को घर के अंदर भी साबित करना है। उन्होंने ज्यादातर सियासी फैसले राजनीतिक दांव–पेंच के माहिर पिता मुलायम सिंह यादव और चाचा शिवपाल यादव की सहमति के बगैर किए हैं, जिसकी वजह से वे परिवार में भी सवालों के घेरे में हैं।

एसपी–बीएसपी में टकराव का जो मौजूदा सबब है, वह यह साबित करने को लेकर है कि राज्य में बीजेपी के मुकाबले कौन है? बीएसपी राज्य में 2014 से लगातार कमजोर हुई है। ऐसा कहा जाता है कि बीएसपी के कोर वोट बैंक (दलित) में बीजेपी सेंध लगाने में सफल हुई है। वोटबैंक में बिखराव की वजह से ही बीएसपी को 2014 के लोकसभा चुनाव में एक भी लोकसभा सीट पर जीत नहीं मिली थी, जबकि एसपी पांच और कांग्रेस दो लोकसभा सीट जीतने में कामयाब रही थी। 2017 के विधानसभा चुनाव में वह राज्य में सत्ता में थी। एक तरफ मोदी लहर और दूसरी तरफ एंटी इन्कम्बैंसी फैक्टर। इसके बावजूद वह राज्य में अपने को दूसरे स्थान पर बनाए रखने में कामयाब हो गई थी, भले ही सदन में उसकी सीटें सवा दो सौ से घटकर 47 रह गई हों। बीएसपी न केवल तीसरे स्थान पर थी बल्कि उसके हिस्से महज 19 सीटें ही आई थीं। इसी के बाद बीएसपी ने एसपी के साथ अपनी तमाम कड़वाहटें भुलाते हुए दोस्ती का हाथ बढ़ाया और 2019 का चुनाव मिलकर लड़ा था। नतीजे आशानुरूप तो नहीं आए, लेकिन बीएसपी एसपी से दो गुनी (10) सीटें जीतने में कामयाब हुईं। नतीजे आते ही बीएसपी ने यह कहते हुए एसपी से गठबंधन खत्म कर लिया कि उसे समाजवादी पार्टी का वोट ट्रांसफर नहीं हुआ।

सूडोकु नवताल-5523 — मध्यम

9		6		3		4		8
	2				9		7	
4			1	6				2
		8			2		3	
1		4				2		5
	3		5			8		
7				9	5			3
	8		6				4	
6		2		7		5		1

Jagrutidaar.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5522 का हल

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7

अपना ब्लॉग

अगर वोट ट्रांसफर नहीं होता

मोहन। समाजवादी पार्टी का कहना था कि अगर उसका वोट ट्रांसफर नहीं होता, तो बीएसपी शून्य से दस पर नहीं आ सकती थी। बीएसपी का वोट उसे नहीं मिला, इस वजह से वह पांच की पांच सीट पर ही रह गई। एसपी अब बीएसपी से अपना हिसाब चुकता करना चाहती है। एसपी चीफ अखिलेश यादव ने यह साफ भी कर दिया है कि वे अब किसी पार्टी के साथ गठबंधन करके चुनाव नहीं लड़ेंगे। एसपी को लगा कि बीएसपी उससे समर्थन वापस ले सकती है तो उसने उसके विधायकों को अपने पाले में करने की कोशिश शुरू की। बीएसपी ने अपने विधायकों को बचाने के लिए लखनऊ के स्टेट गेस्ट हाऊस में बंद कर लिया। एसपी कार्यकर्ताओं ने विधायकों को छुड़ाने के लिए गेस्ट हाऊस पर हल्ला बोल दिया था। इसी घटना की वजह से तत्कालीन मुलायम सरकार बर्खास्त हुई थी और 25 साल दोनों दलों ने एक–दूसरे के साथ कोई मंच शेयर नहीं किया।